पौलुस के धर्मविज्ञान का केन्द्र

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय दो

पौलुस और गलातियों

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

तैयारी 5

नोट्स 6

I. परिचय (0:28) 6

II. पृष्ठभूमि (2:43) 6

A. पहली यात्रा (3:17) 6

B. समस्याएँ (6:33) 7

1. अन्यजातियों का भारी मात्रा में विश्वास में आना (6:57) 7

2. झूठे शिक्षक (8:48) 8

III. विषय सूची (14:22) 9

A. अध्यादेश/अतिरिक्त सन्देश (15:28) 9

B. समस्या का परिचय (15:49) 9

C. ऐतिहासिक अभिलेख (16:50) 9

1. बुलाहट और प्रशिक्षण (17:21) 10

2. अगुवों से मुलाकात (18:53) 10

3. पतरस से मतभेद (20:13) 11

D. धर्मविज्ञानी प्रमाण (21:57) 11

1. आरम्भिक अनुभव (22:40) 11

2. अब्राहम का विश्वास (23:47) 12

3. वर्तमान अनुभव (29:29) 13

4. अब्राहम की पत्नियाँ और पुत्र (30:16) 13

E. व्यवहारिक उपदेश (32:28) 13

1. मसीह में स्वतंत्रता (33:13) 14

2. आत्मा की सामर्थ (35:32) 14

3. दिव्य न्याय (37:17) 14

IV. धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण (38:54) 15

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

A. मसीह (41:29) 15

B. सुसमाचार (43:08) 15

C. व्यवस्था (45:57) 16

D. मसीह के साथ एकता (49:21) 16

E. पवित्र आत्मा (52:42) 17

F. नई सृष्टि (56:36) 18

V. उपसंहार (58:17) 18

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 19

उपयोग के प्रश्न 26

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

तैयारी

- पढ़ें गलातियों की पत्री
- पढ़ें प्रेरितों के काम 13-14

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:28)

II. पृष्ठभूमि (2:43)

A. पहली यात्रा (3:17)

पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा ईस्वी सन् 46 के लगभग शुरू हुई जब परमेश्वर ने सीरियाई अन्ताकिया की कलीसिया को पौलुस और बरनबास को विशेष मिशनरी कार्य के लिए अलग करने को कहा।

यात्रा :

- सीरियाई अन्ताकिया
- सलमीस
- पाफुस
- पिरगा
- पिसदिया के अन्ताकिया
- इकुनियुम
- लुस्त्रा
- दिरबे

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- लुस्त्रा
- इकुनियुम
- पिसिदिया के अन्ताकिया
- पिरगा
- अतालिया
- सीरियाई अन्ताकिया

ऐसा प्रतीत होता है कि पौलुस ने गलातियों की पत्री को ईस्वी सन् 48 में, गलातिया छोड़ने के लगभग एक वर्ष के अन्दर, लेकिन यरूशलेम की सभा होने से पूर्व लिखा।

B. समस्याएँ (6:33)

1. अन्यजातियों का भारी मात्रा में विश्वास में आना (6:57)

एक यहूदी के रूप में, पौलुस ने स्वाभाविक रूप से यहूदियों के बीच सुसमाचार प्रचार को प्राथमिकता दी। परन्तु सुसमाचार के प्रति उनके नकारात्मक प्रत्युत्तरों से पौलुस को निश्चय हो गया कि परमेश्वर उसे अन्यजातियों तक पहुँचने के लिए बुला रहा था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. झूठे शिक्षक (8:48)

गलातिया में झूठे शिक्षक उठ खड़े हुए। इन यहूदी शिक्षकों ने कलीसिया में अन्यजातियों से निपटने के लिए अपने तरीकों का प्रयोग करते हुए बल दिया कि उनका खतना किया जाए।

पौलुस का विश्वास था कि अन्यजाति मसीहियों के लिए खतने पर बल देना मसीही विश्वास की गम्भीर गलतफहमियों को प्रतिबिम्बित करता है।

- इसने उद्धार के लिए मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान की पर्याप्तता का इन्कार किया।

- इसने शरीर की ताकत पर अनुचित निर्भरता को प्रदर्शित किया।

- इसके फलस्वरूप गलातिया की कलीसियाओं में विभाजन हो गया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

III. विषय सूची (14:22)

पौलुस द्वारा गलातियों को लिखी पत्री छह मुख्य भागों में विभाजित है।

A. अध्यादेश/अतिरिक्त सन्देश (15:28)

B. समस्या का परिचय (15:49)

पौलुस ने तुरन्त गलातिया में झूठी शिक्षा की समस्या पर हमला किया।

C. ऐतिहासिक अभिलेख (16:50)

इसमें कई ऐतिहासिक अभिलेख शामिल हैं जिनमें पौलुस अपने अधिकार को साबित करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. बुलाहट और प्रशिक्षण (17:21)

पौलुस ने अरब में तीन वर्षों तक सीधे यीशु से सुसमाचार और मसीही सिद्धान्तों को सीखा।

स्वयं यीशु ने पौलुस को उसके नये विचारों को सिखाया था।

2. अगुवों से मुलाकात (18:53)

गलातियों के इस भाग में वर्णित दूसरा ऐतिहासिक अभिलेख यरूशलेम में कलीसिया के अगुवों से पौलुस की मुलाकात के बारे में बताता है।

इस मुलाकात में उन्होंने अन्यजातियों को सुसमाचार सुनाने की उसकी विधि की पुष्टि की।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. पतरस से मतभेद (20:13)

पौलुस का तीसरा ऐतिहासिक अभिलेख सीरिया के अन्ताकिया में पतरस के साथ मतभेद का वर्णन करता है।

यदि पौलुस का अधिकार उत्कृष्ट प्रेरित पतरस को भी सुधारने के लिए पर्याप्त था, तो यह गलातिया के झूठे शिक्षकों को सुधारने के लिए निश्चित रूप से पर्याप्त था।

D. धर्मविज्ञानी प्रमाण (21:57)

पौलुस ने विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाने के अपने सिद्धान्त के लिए अधिक प्रत्यक्ष धर्मविज्ञानी तर्क प्रस्तुत किए।

1. आरम्भिक अनुभव (22:40)

पौलुस ने गलातियों के मसीही विश्वास के आरम्भिक अनुभव पर ध्यान केन्द्रित किया।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. अब्राहम का विश्वास (23:47)

पौलुस अब्राहम के विश्वास के उदाहरण की ओर मुड़ा। पौलुस ने तर्क दिया कि परमेश्वर ने अब्राहम को विश्वास के कारण आशीष दी थी, परमेश्वर की व्यवस्था को मानने के कारण नहीं।

पहला, पौलुस ने संकेत दिया कि अब्राहम को परमेश्वर के इस वायदे पर विश्वास के कारण धर्मी ठहराया गया था कि उसके एक पुत्र उत्पन्न होगा।

दूसरा, पौलुस ने आगे संकेत दिया कि परमेश्वर ने अब्राहम से कहा था कि उद्धार की आशीष उसके द्वारा अन्यजातियों तक फैल जाएगी।

तीसरा, पौलुस चाहता था कि गलातिया के लोग इस बात को समझें कि खतने में शरीर को काटना स्वयं को स्राप देने का एक प्रतीक था, धार्मिकता को प्राप्त करने का तरीका नहीं।

चौथा, पौलुस ने यह तर्क देने के द्वारा झूठे शिक्षकों की आपत्ति को ख़ारिज किया कि मूसा की व्यवस्था ने अब्राहम के उदाहरण को पलटा नहीं था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पाँचवां, पौलुस ने घोषणा की कि परमेश्वर की आशीषें केवल उन लोगों को प्राप्त हुई जो अब्राहम के विशेष पुत्र, मसीह से संबंधित हैं।

3. वर्तमान अनुभव (29:29)

पौलुस गलातियों की आत्मिक खुशहाली के लिए गहरी चिन्ता व्यक्त करता है; वह चाहता था कि वे अपनी निराशाजनक आत्मिक अवस्था को पहचानें।

4. अब्राहम की पत्नियाँ और पुत्र (30:16)

पौलुस ने अब्राहम की पत्नियों और पुत्रों के बाइबल के अभिलेख पर ध्यान देने के द्वारा झूठे शिक्षकों के विरूद्ध अपना तर्क दिया।

E. व्यवहारिक उपदेश (32:28)

पौलुस ने कई व्यवहारिक समस्याओं को संबोधित किया जो झूठे शिक्षकों के कारण गलातिया में उत्पन्न हुई थीं।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. मसीह में स्वतंत्रता (33:13)

पौलुस ने गलातियों से मसीह में अपनी स्वतंत्रता के प्रति सच्चे बने रहने को कहा। उसने मसीही स्वतंत्रता को बनाए रखने की आवश्यकता पर बल दिया।

पौलुस ने गलातियों को चेतावनी दी कि वे यहूदी परम्पराओं से अपनी मसीही स्वतंत्रता का परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था का अनादर करने के लिए अधिकार के रूप में प्रयोग न करें।

2. आत्मा की सामर्थ (35:32)

पौलुस ने उत्तर दिया कि प्रत्येक विश्वासी को अगुवाई और सामर्थ के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा करना चाहिए न कि शरीर पर।

3. दिव्य न्याय (37:17)

पौलुस ने गलातिया की कलीसियाओं को चेतावनी दी कि वे परमेश्वर के आने वाले न्याय को न भूलें। उसकी आशा थी कि यह चेतावनी उन्हें उद्धार के लिए मसीह और पवित्र आत्मा पर भरोसा करने के लिए उत्साहित करेगी।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. धर्मविज्ञानी दृष्टिकोण (38:54)

गलातियों की पुस्तक में पौलुस की शिक्षा उसके केन्द्रिय युगान्त विज्ञान संबंधी विचारों का प्रयोग थी।

गलातिया की मूलभूत गलती यह थी कि झूठे शिक्षकों ने इस बात को बहुत कम करके आँका था कि मसीह अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा किस स्तर तक आने वाले युग को लाया था। वे यह समझने में चूक गए कि आने वाले युग का कितना अधिक पहले से ही उपस्थित था।

"निम्नस्तरीय युगान्त विज्ञान" ने मसीह के प्रथम आगमन के महत्व को कम कर दिया था।

A. मसीह (41:29)

पौलुस ने उस उद्देश्य की ओर ध्यान खींचा जिसके लिए पिता ने मसीह को भेजा था : "ताकि हमें इस वर्तमान बुरे संसार से छुड़ाए।"

B. सुसमाचार (43:08)

"सुसमाचार" के विषय पर झूठे शिक्षकों से अपनी असहमति का वर्णन करने के द्वारा पौलुस ने गलातियों के "निम्नस्तरीय युगान्त विज्ञान" पर अपनी चिन्ता जताई।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब पौलुस ने कहा कि झूठे शिक्षकों के पास "सुसमाचार था ही नहीं" तो उसका आशय था कि उन्होंने इस बात से इनकार किया कि मसीह आने वाले युग को, उद्धार के युग को, परमेश्वर के राज्य के युग को लाया था। खतने की शिक्षा देने के द्वारा, जिसका आशय था व्यवस्था के कार्यों के द्वारा धर्मी ठहराया जाना, झूठे शिक्षकों ने मसीह के प्रथम आगमन के सच्चे महत्व का इनकार किया।

C. व्यवस्था (45:57)

गलातियों 3:19 : "तब फिर व्यवस्था क्यों दी गई? वह तो अपराधों के कारण बाद में दी गई कि उस वंश के आने तक रहे, जिस को प्रतिज्ञा दी गई थी।"

व्यवस्था परमेश्वर के लोगों को उद्धार देने या उन्हें धार्मिक जीवन बिताने की सामर्थ देने के लिए नहीं दी गई थी; यह उनके पाप को प्रकट करने के लिए दी गई थी।

D. मसीह के साथ एकता (49:21)

पौलुस ने बल दिया कि धार्मिकता और धार्मिक जीवन मसीह के साथ एकता के द्वारा आना था।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस ने मसीह को अब्राहम के वंश के रूप में देखा जिसके द्वारा उद्धार का प्रत्येक पहलू आता है, और स्पष्ट किया कि विश्वासियों को परमेश्वर की सारी आशीषें केवल तभी प्राप्त होती हैं जब वे मसीह के साथ एक होते हैं।

E. पवित्र आत्मा (52:42)

पवित्र आत्मा की भूमिका उन मुख्य विचारों में से एक था जो इस पत्री को लिखते समय पौलुस के मन में थे।

पौलुस ने पवित्र आत्मा के कार्य और मानवीय प्रयास के शरीर के कार्य के बीच अन्तर की ओर ध्यान खींचा। गलातियों अध्याय 5:16-26 में उसने शरीर और आत्मा के बीच तीव्र विरोधाभास को विकसित किया।

पौलुस ने गलातियों को याद दिलाया कि जो मसीह के हैं उनमें पवित्र आत्मा अपनी सामर्थ की भरपूरी के साथ पहले से ही है। जब मसीह के अनुयायी आत्मा की सामर्थ पर भरोसा रखते हैं; तो वह धार्मिकता के फल को उत्पन्न करने के लिए उनके अन्दर कार्य करता है।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

F. नई सृष्टि (56:36)

पौलुस की अन्तिम दिनों के सिद्धान्त पर अत्यधिक निर्भरता को नई सृष्टि के विचार की उसकी अपील में देखा जा सकता है जो उसकी पत्री के अतिरिक्त सन्देश में आता है।

महत्वपूर्ण यह है कि प्रत्येक व्यक्ति “नई सृष्टि” का हिस्सा बने।

V. उपसंहार (58:17)

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा के उद्देश्य और यात्रा-मार्ग का वर्णन कीजिए।

2. गलातिया में ऐसी कौनसी विशेष समस्याएँ थीं जिन्होंने पौलुस को पत्री लिखने के लिए प्रेरित किया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. किस प्रकार पौलुस की पहली मिशनरी यात्रा और गलातिया की विशेष समस्याओं का ज्ञान पौलुस द्वारा लिखी बातों को समझने में आपकी सहायता करता है?

4. गलातियों 1:6-10 में पौलुस ने इस बात पर बल क्यों दिया कि उसकी शिक्षाओं को ठुकराने का अर्थ है झूठे सुसमाचार को स्वीकार करना?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार पौलुस की बुलाहट और प्रशिक्षण, अगुवों के साथ उसकी मुलाकात और पतरस के साथ उसके मतभेद की तीन ऐतिहासिक घटनाओं ने अपने अधिकार को साबित करने में पौलुस की सहायता की।

6. उन प्रत्यक्ष धर्मविज्ञानी तर्कों को स्पष्ट कीजिए जो पौलुस ने गलातियों 3:1–4:31 में विश्वास द्वारा धर्मी ठहराए जाने के अपने सिद्धांत के लिए दिए।

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. गलातियों 5:1–6:10 में पौलुस ने उन समस्याओं को कैसे संबोधित किया जो झूठे शिक्षकों ने खड़ी की थीं, और उसके विशेष उपदेश क्या थे?

8. किस प्रकार मसीह के बारे में पौलुस का वर्णन अंत के दिनों के उसके सिद्धांत को दर्शाता है?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. पौलुस झूठे शिक्षकों के सुसमाचार को दूसरा सुसमाचार या सुसमाचार है ही नहीं क्यों कहता है?

10. पौलुस ने गलातियों के समक्ष व्यवस्था के उद्देश्य को कैसे स्पष्ट किया?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार मसीह के साथ एक होने का पौलुस का तर्क उसके युगान्त-विज्ञान से जुड़ा है।

12. विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा की भूमिका पर पौलुस का दृष्टिकोण क्या था?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

13. किस प्रकार पौलुस ने बल दिया कि नई सृष्टि में जीना हर विश्वासी का सबसे बड़ा उद्देश्य होना चाहिए?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. गलातिया के मसीही परिपक्व होने की अपेक्षा आत्मिक अपरिपक्वता में चले गए थे। ऐसे ही कुछ उदाहरण दीजिए जिसमें आपको और आपकी कलीसिया को परिपक्वता में बढ़ने की आवश्यकता है।

2. सेवा करते हुए पौलुस की स्थिति क्या थी, और किस प्रकार उसने गलातियों की सहायता के लिए पवित्रशास्त्र का इस्तेमाल किया? किस प्रकार आप और आपकी कलीसिया उन तरीकों से सीख सकते हैं जिनमें पौलुस ने समस्याओं को संबोधित किया?

3. किस प्रकार के भेद आपका कलीसियाई समुदाय करता है? गलातियों 3:28-29 के प्रकाश में क्या आपके भेद परमेश्वर के समक्ष धर्मी हैं?

4. गलातियों 5 में पौलुस ने स्वतंत्रता और जिम्मेदारी के बीच संतुलन को संबोधित किया। आप किस प्रकार मसीह में स्वतंत्रता और परमेश्वर की नैतिक व्यवस्था के प्रति उचित सम्मान के बीच संतुलन बैठा सकते हैं?

5. हमारे जीवनों में पवित्र आत्मा क्या भूमिका अदा करता है? आत्मा के द्वारा जीने का क्या अर्थ है?

6. जब आप इस पत्री का अध्ययन आज कर रहे हैं, तो किस प्रकार परमेश्वर का अनुग्रह आपके लिए और अधिक स्पष्ट हुआ है?

7. इस अध्याय का कौनसा पहलू आपके लिए सबसे अधिक अर्थपूर्ण रहा है? क्यों?

© 2007 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org